

24-11-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - ज्ञान धन का दान करने के लिए विचार सागर मंथन करो, दान का शौक रखो तो मंथन चलता रहे"



Both are Complements to Each other (Vice versa)





प्रश्न:- ज्ञान मार्ग में सदा अपने को तन्दरूस्त रखने का साधन क्या है?



उत्तर:- सदा अपने आपको तन्दरूस्त रखने के लिए बाबा द्वारा जो भी ज्ञान घास (मुरली) मिलती है, उसे खाकर फिर उगारना चाहिए अर्थात् मंथन करना चाहिए। जिन बच्चों को मंथन करने की अर्थात् हज़म करने की आदत है, वह बीमार नहीं पड़ सकते। सदा तन्दरूस्त वह है जिसमें विकारों की बीमारी नहीं।





गीत:- तू प्यार का सागर है...

Click

तू प्यार का सागर है
तेरी इक बूँद के प्यासे हम
लौटा जो दिया तुमने, चले जायेंगे जहाँ से हम
तू प्यार का सागर है ...

घायल मन का, पागल पंछी उड़ने को बेक़रार
पंख हैं कोमल, आँख है धुँधली, जाना है सागर पार
जाना है सागर पार
अब तू हि इसे समझा, राह भूले थे कहान से हम
तू प्यार का सागर है ...

इधर झूमती गाये ज़िंदगी, उधर है मौत खड़ी
कोई क्या जाने कहाँ है सीमा, उलझन आन पड़ी
उलझन आन पड़ी
कानों में ज़रा कह दे, कि आये कौन दिशा से हम
तू प्यार का सागर है ...

हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए की स्व-अध्ययन सबसे महत्वपूर्ण है क्योंकि स्वाध्याय/Self Study से ही हम ज्ञान की गहराई में जा सकेंगे और उसी गहराई में जाने के कारण उस ज्ञान को यथार्थ रीति समझ सकेंगे और उसी के चलते बहुत सरलता से धारण भी कर सकेंगे साथ ही आत्मा में जो विकार गहराई में घर कर चुके हैं उनको Analyze कर सकेंगे जिसके चलते उनको easily निकाल भी सकेंगे।

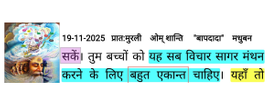

हम ये भार पूर्वक कहते है कि आप मुरली को पढ़कर सेल्फ स्टडी अवश्य कीजिये। जिसको ही मीठे बाबा कहते है कि "अपनी घोट तो नशा चढ़े"; दूसरों के द्वारा मिला हुआ कुछ भी क्षणिक खुशी अवश्य देता है, परंतु स्थाई खुशी/सुख के लिए अपने को ही मेहनत करके कमाई करनी होगी।

तभी आप मुरली को गहराई से समझ पाएंगे और मुरली को समझना अर्थात मीठे शिवबाबा को समझना क्योंकि मुरली है शिवबाबा का मन...

बाबा कहते हैं कि तुम जितना मुझको जानते जाओगे उतना संपन्न बनते जाओगे और अंत में सब कुछ जान जाओगे।

तो याद रहे कि अपनी घोट तो नशा चढ़े...

:n = सेवा

हैं - मेरे को याद करने से तुम सब कुछ जान जायेंगे। अच्छा।

01/04/2026

Note it down

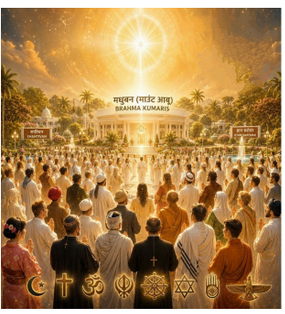

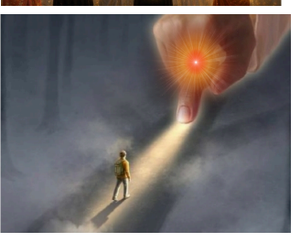

ओम् शान्ति। बच्चों ने गीत सुना। मनुष्य जो भी गीत आदि बनाते हैं, शास्त्र आदि सुनाते हैं, समझते कुछ भी नहीं हैं। जो कुछ पढ़ते आये हैं उससे कोई का कल्याण नहीं हुआ है और ही अकल्याण होता आया है। **सर्व का कल्याणकारी एक ही ईश्वर है।** तुम समझते हो हमारा कल्याण करने वाला आया हुआ है। कल्याण का रास्ता बता रहे हैं। खास तुम भारतवासियों का, आम सारी दुनिया का कल्याण करने वाला एक बाप ही है। सतयुग में सबका कल्याण था, तुम सब सुखधाम में थे और बाकी सब शान्तिधाम में थे। यह बच्चों की बुद्धि में है परन्तु प्वाइंट खिसक जाती हैं, पूरी धारणा नहीं करते हैं।



अगर एक प्वाइंट पर विचार सागर मंथन करते रहें तो ऐसा न हो। जानवरों में जितना अक्ल है, आजकल के मनुष्यों में उतना भी अक्ल नहीं। जानवर (गऊ) घास खाते हैं तो उगारते रहते हैं।

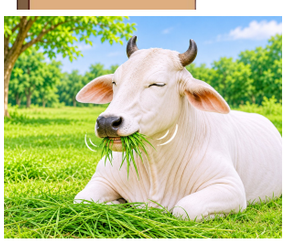

तुमको भी भोजन मिलता है। परन्तु *Here is the Fault* **तुम फिर सारा दिन उगारते नहीं हो।** वह तो सारा दिन उगारते ही रहते हैं। यह तुमको मिलता है ज्ञान घास। योग और ज्ञान। इस पर दिन भर विचार सागर मंथन करते रहना चाहिए। **जिनको सर्विस का शौक नहीं, वह**



Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue= धारणा, Green = सेवा

M.M.M.....imp.



विचार सागर मंथन करके क्या करेंगे। शौक नहीं तो करेंगे भी नहीं। कोई-कोई को ज्ञान धन देने का शौक रहता है। गऊशाला में मनुष्य जाकर गऊओं को घास आदि देते हैं। वह भी पुण्य समझते हैं। बाप तुमको यह ज्ञान घास खिलाते हैं। इस पर विचार सागर मंथन करते रहेंगे तो खुशी में रहेंगे और सर्विस का शौक भी होगा। कोई लोटा भर लेते हैं अथवा बूँद लेते हैं, वह भी स्वर्ग में चले जायेंगे। स्वर्ग के द्वार तो खुलने ही हैं। यूँ तो ज्ञान सागर को हप करना है। कोई तो सारा हप करते हैं, कोई तो बूँद लेते हैं फिर भी स्वर्ग में तो जायेंगे। बाकी जितना जितना धारणा करेंगे उतना ऊंच पद पायेंगे। बाकी स्वर्ग में एक बूँद से भी चले जायेंगे। मनुष्य मरते हैं तो उनको गंगा की एक बूँद देते हैं। कोई-कोई घर में सदैव गंगा जल ही पीते हैं। कितना पीते होंगे। गंगा तो बहती रहती है। उनको तो कोई हप कर न सके। तुम्हारे लिये तो गाया हुआ है सागर को हप कर लिया। **जो ज्ञान सागर के नजदीक आ जाते हैं, जास्ती सर्विस करते हैं वही विजय माला में पिरोये जाते हैं।** जितना-जितना जो हप करते हैं और दूसरों का कल्याण करते हैं वह पद भी पाते हैं, जितना धारणा करेंगे















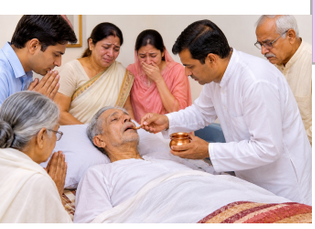



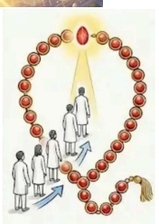

Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue= धारणा, Green = सेवा



उतना खुशी भी होगी। धनवान को खुशी होती है ना। जिनके पास बहुत अथाह धन होता है, दान करते हैं, कालेज, धर्मशाला, मन्दिर आदि बनवाते हैं तो उन्हें इतनी खुशी भी रहती है। यहाँ तो तुमको मिलते हैं अविनाशी ज्ञान रत्न। 21 जन्मों के लिए अविनाशी खजाना। जो अच्छी रीति धारण कर फिर दान भी करते हैं, उन्हें अच्छा पद मिलता है। कोई-कोई बच्चे लिखते हैं - बाबा हमको दिल होती है नौकरी छोड़ इस रूहानी सर्विस में लग जायें। प्रोजेक्टर, प्रदर्शनी लेकर फिरते रहें। एक बूँद भी कोई को मिलेगी तो कल्याण हो जायेगा। सर्विस का बहुत शौक है। बाकी हर एक की अवस्था को बाबा जानते हैं।



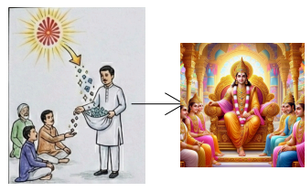

सर्विस के साथ फिर गुण भी चाहिए। न क्रोध होना चाहिए, न कोई उल्टा-सुल्टा ख्याल आना चाहिए। विकारों की कोई भी बीमारी न हो। तन्दरुस्ती अच्छी चाहिए। जिनमें विकार कम हैं, बाबा कहेंगे यह तन्दुरुस्त हैं। बाबा महिमा करेंगे ना। गाया हुआ भी है -कौन-कौन अच्छे महारथी हैं। उन्होंने फिर असुर और देवताओं की लड़ाई दिखाई है। देवताओं की जीत हुई। अब हमारी लड़ाई है 5 विकारों रूपी असुरों से। और कोई किसम के मनुष्य असुर नहीं



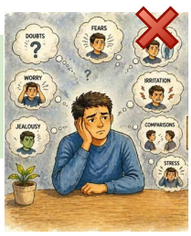

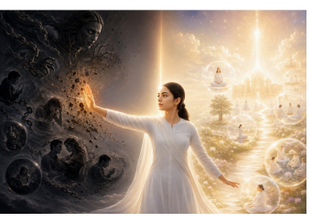

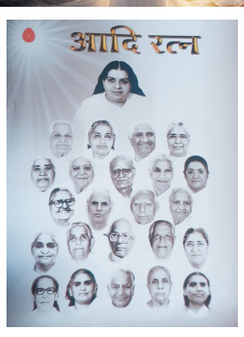







होते हैं, जिनमें आसुरी स्वभाव है, उनको ही असुर कहा जाता है। नम्बरवन आसुरी स्वभाव है काम का, इसलिए संन्यासी भी इसे छोड़ भागते हैं। इन आसुरी अवगुणों को छोड़ने में मेहनत लगती है। रहना भी गृहस्थ में है परन्तु आसुरी स्वभाव छोड़ना है। पवित्र बनने से मुक्ति जीवनमुक्ति मिलती है। कितनी भारी प्राप्ति है। वह तो घरबार छोड़ भाग जाते हैं, प्राप्ति कुछ है नहीं। इन चित्रों में कितनी अच्छी-अच्छी बातें समझने की हैं। वे लोग तो सिर्फ चित्रों का शो करते हैं। सिर्फ चित्र देखने के लिए कितने जाते हैं। फायदा कुछ भी नहीं। यहाँ इन चित्रों में कितना ज्ञान है, इससे फायदा बहुत होता है। इसमें आर्ट आदि की कोई बात नहीं। न कोई बनाने वाले की होशियारी आदि है। उन्हों के तो नाम चित्र पर लिखे हुये होते हैं। आर्टिस्ट को भी इनाम मिलता है। कई इतना समझते हैं हाँ बाप को तो जरूर याद करना चाहिए। इतना कहा तो भी प्रजा बनी। प्रजा तो अथाह बननी है। मैं तो हूँ ज्ञान का सागर। एक बूँद भी किसको मिलने से स्वर्ग में आ ही जायेंगे।











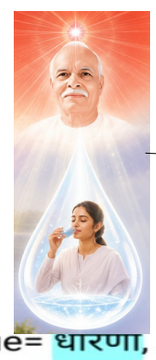







Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue= धारणा, Green





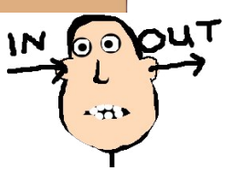

तुम समझते हो प्रदर्शनी, मेले से बहुतों का कल्याण होता है। ईश्वर कल्याणकारी है ना। तुम्हारा भी कल्याण हो रहा है। परन्तु इसमें फिर **अपना विचार सागर मंथन करता रहे**। स्मृति में लाता रहे तो बहुत फायदा होगा। उल्टी-सुल्टी बातें तो एक कान से सुन दूसरे कान से निकाल देनी चाहिए। बाप कहते हैं मैं तुमको बहुत अच्छी बातें सुनाता हूँ। नम्बरवन मुख्य बात एक ही है - कोई को भी बाप का परिचय दो।



बस एक बाप को याद करो, वही सब कुछ है। भक्ति मार्ग में बहुत ऐसे होते हैं। बोलो, आप तो यह बहुत



अच्छा करते हो। अंगुली से इशारा करते हैं। सब कुछ परमात्मा कराते हैं। वह सबका कल्याणकारी ऊपर में रहते हैं। रहती तो तुम आत्मायें भी वहाँ ही हो। यह सारी ज्ञान की बातें तुम अभी समझते हो।

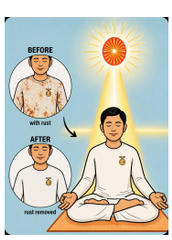



बाप कहते हैं बच्चे, अभी तुम्हारा यह कपड़ा (शरीर) सड़ गया है। सतयुग त्रेता में कितना अच्छा वस्त्र था। अब सड़ा हुआ वस्त्र कहाँ तक पहनेंगे। परन्तु यह

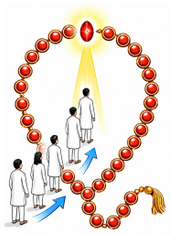

विजयी माला का मणका बनना।

कोई भी समझते नहीं हैं। बाप आकर जब समझाये तब समझें। अभी तुम बच्चे समझते हो - ज्ञान देने वाला है ही एक बाप। वह है सागर। **जो सागर हप कर लेते हैं वही विजय माला के दाने बन जाते हैं।** वो सदैव सर्विस पर ही तत्पर रहते हैं। बाबा आये ही हैं बच्चों को पावन बनाने, पावन बनकर फिर वापस जाना है। जहाँ से आये हैं फिर वहाँ ही जायेंगे नम्बरवार। आगे पीछे नहीं जा सकते हैं। नाटक में एक्टर्स का एक्ट टाइम पर होता है ना। इसमें भी जो एक्टर्स हैं वह नम्बरवार अपने-अपने समय पर आते जायेंगे। यह बेहद का नाटक बना हुआ है। ब्रह्म में हम आत्मायें बिन्दी रहती हैं। वहाँ और कुछ क्या होगा। कहाँ एक आत्मा बिन्दी, कहाँ इतना बड़ा शरीर। आत्मा कितनी थोड़ी जगह लेगी। ब्रह्म महतत्व कितना बड़ा है। **जैसे पोलार का इन्ड नहीं, वैसे ब्रह्म महतत्व की भी इन्ड नहीं होती है।** कितनी कोशिश करते हैं अन्त पाने की, परन्तु पा नहीं सकते, कितना माथा मारते रहते हैं। परन्तु कोई चीज़ ही नहीं जिसको पकड़े या पार जायें। साइंस का घमण्ड कितना है। कुछ भी फायदा नहीं। सुना है ना आकाश ही आकाश, पाताल ही पाताल। समझते हैं







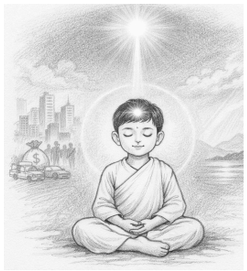

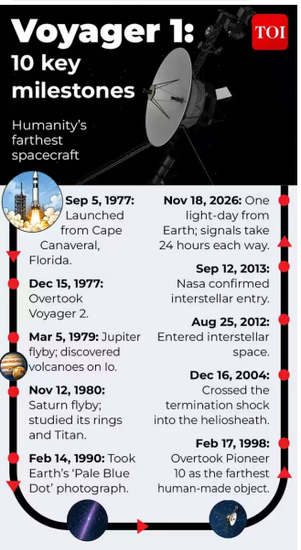

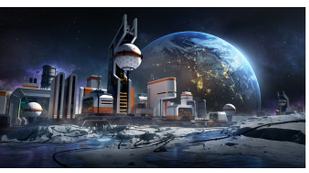

मून में दुनिया होगी। वह भी ड्रामा में उन्हों का पार्ट है। फायदा कुछ नहीं। बाप तो आकर हमको विश्व का मालिक बनाते हैं। कितना फायदा है। बाकी मून में जाओ, छू मन्त्र से भभूत आदि निकालो... इससे फायदा क्या। अब तो हम बेहद के बाप से बेहद का वर्सा लेते हैं। कल्प-कल्प लेते आये हैं। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट होती है। यह चक्र फिरता रहता है। दुनिया में पहले सिर्फ भारत ही था। भारतवासी ही विश्व के मालिक थे। वहाँ देवताओं को कोई खण्ड का मालूम नहीं रहता। यह तो बाद में वृद्धि को पाते हैं। नये-नये धर्म स्थापक आकर अपना-अपना धर्म स्थापन करते हैं। बाकी वह कोई सद्गति तो नहीं करते हैं, सिर्फ धर्म स्थापन करते हैं। उनका क्या गायन होगा! मुक्तिधाम से आते हैं पार्ट बजाने। मनुष्य कहते हैं मोक्ष में बैठे रहें। इस आवागमन के चक्र में आये ही क्यों! परन्तु इसमें तो आना ही है। पुनर्जन्म लेना ही है, फिर वापिस जाना है। यह बना-बनाया ड्रामा का चक्र है। लाखों वर्ष का ड्रामा तो कोई होता ही नहीं। यह तो नेचुरल अनादि ड्रामा है, इसको कहा जाता है ईश्वरीय कुदरत। रचता



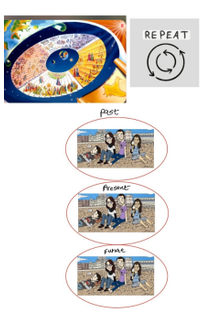









अब ना देर लगाओ देर
बस कृपा करो महादेव

ये दुनिया एक छलावा
तू सांचा ठौर है बाबा

तो आवा, ओ बाबा
के आवागमन मिटा दो भोले शंकर
हर हर महादेव

भूल भुलैया
माया तुम्हरी
कठिन डगरिया बाबाजी

लेनदार हम
सेठ हो तुम ये
तुम्हरी बजरिया बाबाजी

सेवक हम हैं
स्वामी हो तुम
गाढ़ो नाता बाबाजी

हमने टेर लगाई टेर
अब कृपा करो महादेव

ये दुनिया एक छलावा
तू सांचा ठौर है बाबा
तो आवा, ओ बाबा
के आवागमन मिटा दो भोले शंकर
हर हर महादेव





और रचना की जो कुदरत है - उसको जानना होता है। ऐसा कोई मनुष्य नहीं जो बैठकर पुरुषार्थ करे सृष्टि चक्र को जानने का। यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है, **यह ख्याल करना आयेगा ही नहीं**। सबसे पुराने से पुराना चित्र है शिवलिंग का। खुदा आया हुआ है फिर उसका यादगार बनाते हैं। पहले जब शिव की पूजा शुरू होती है तो हीरे का लिंग बनाते हैं। फिर जब भक्ति रजो तमो हो जाती है तो पत्थर का भी बनाते हैं। शिवबाबा तो हीरों का नहीं है। वह तो एक बिन्दी है, पूजा के लिए बड़ा बनाते हैं। समझते हैं हम हीरे का शिवलिंग बनायें। सोमनाथ के इतने बड़े मन्दिर में एक बिन्दी रखें तो समझ में भी न आये। बाप समझाते हैं - भक्ति मार्ग में क्या-क्या होता है। साइंस वाले इनवेन्शन करते रहते हैं। अच्छी -अच्छी चीजें निकालते रहते हैं। विनाश के लिए भी निकालते रहते हैं। आगे बिजली थोड़ेही थी। मिट्टी का दीपक जलाते थे।







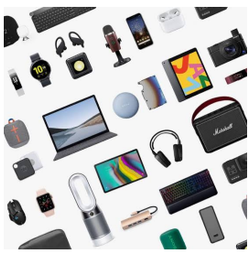



Attention..!

बाप समझाते हैं मीठे-मीठे बच्चे **थोडे में राज़ी मत**



हो जाओ। अच्छी रीति धारण कर सागर को हप करो। जो अच्छी सर्विस करेंगे तो पद भी अच्छा पायेंगे। सारा दिन खुशी का पारा चढ़ा रहना चाहिए। यह तो छी-छी दुनिया है। अब यहाँ से जायेंगे। पुरानी दुनिया तो खत्म होनी ही है। तैयारियाँ हो रही हैं। बाकी थोड़े दिन हैं, इसमें भी कितनी सर्विस करनी है। सारे भारत में तो क्या विलायत में भी सब तरफ चक्र लगाना है। अखबारों द्वारा विलायत के कोने-कोने तक भी पता लग जाना है। इस सीढ़ी आदि से झट समझ जायेंगे। बाप आता ही है बच्चों को फिर से स्वर्गवासी बनाने। बरोबर लक्ष्मी-नारायण भारत में ही राज्य करके गये हैं। महिमा तो बहुत करते हैं कि भारत प्राचीन देश है। बहुत महिमा करते हैं भारत ऐसा था, भारत में ऐसी पवित्र देवियाँ थी। तुम जानते हो हम बाप से 21 जन्मों की प्रालब्ध पाते हैं। बाप बिल्कुल सिम्पुल पढ़ाते हैं। दिखाते हैं द्रोपदी के पाँव दबाये, वह भी कुछ है नहीं। यह तो बाबा कहते हैं बच्चे भक्ति मार्ग में धक्के खाकर थक गये हैं। अब हम तुम्हारी थक दूर करते हैं, तुम धक्के खा-खा कर पतित बन पड़े हो। बाप कहते हैं मैं तुम्हारी थक दूर कर रहा हूँ। फिर कभी दुःख नहीं देखेंगे। जरा भी



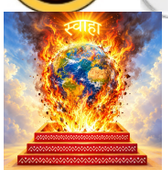

As Certain as Death











How Sweet...!

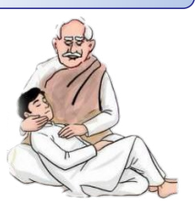

Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue= धारणा, Green = सेवा



दु:ख का नाम नहीं होगा। बाकी पुरुषार्थ कर ऊंच पद पाना है। अच्छा पद पायेंगे तो कहेंगे ना -इसने पास्ट जन्म में अच्छे कर्म किये हैं। गायन तो होता है ना। परन्तु कोई जानते नहीं हैं कि इन्होंने कब पुरुषार्थ कर यह पद पाया ! अभी बाप तुमको ऐसे कर्म सिखलाते हैं। तुमको भी कहते हैं अच्छे कर्म कर ऊंच पद पाओ। यहाँ मनुष्य के कर्म विकर्म होते हैं। वहाँ तो है ही स्वर्ग। कर्म अकर्म होते हैं। वहाँ यह ज्ञान रहता नहीं है। बाप कहते हैं कर्मो की गति मैं जानता हूँ। इस समय जो अच्छा कर्म करेंगे वह फल भी अच्छा पायेंगे। यह कर्मक्षेत्र है। कोई बहुत अच्छे कर्म करते हैं। **कोई हैं जिन्हें सर्विस की ही तात लगी रहती है।** पूछते हैं बाबा हमारे में कोई खामी है क्या? नहीं, सर्विस तो जितनी कर सकेंगे उतनी करेंगे। सर्विस वृद्धि को पाती रहेगी। सर्विस करने वाले भी निकलते जायेंगे। दिल में आथत है - बाकी थोड़े रोज़ हैं। अब ऐसा पुरुषार्थ करें जो वहाँ भी ऊंच पद पायें। **बाबा यह ज्ञान घास खिलाते हैं, कहते हैं उगारते रहो तो धारणा पक्की हो जाए। खुशी का पारा भी चढ़े।** बहुत सर्विस करनी है, बहुतों को पैगाम देना है। तुम पैगम्बर के बच्चे पैगम्बर हो। एक दिन बड़े अखबारों











Always remember this..

Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue= धारणा, Green = सेवा

Coming soon...



में भी तुम्हारे चित्र पड़ेंगे। विलायत तक तो अखबारें जाती हैं ना। चित्रों से समझ जायेंगे, यह नॉलेज तो गॉड फादर की है। बाकी मेहनत है मन्मनाभव होने की। वह भारतवासी ही मेहनत करते हैं। अच्छा!



मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।



धारणा के लिए मुख्य सारः-



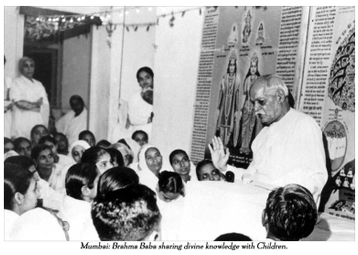

Mumbai: Brahma Baba sharing divine knowledge with Children.

1) बाप जो अच्छी-अच्छी बातें सुनाते हैं, उन पर विचार सागर मंथन कर बहुतों का कल्याणकारी बनना है। उल्टी-सुल्टी बातें एक कान से सुन दूसरे से निकाल देनी हैं।

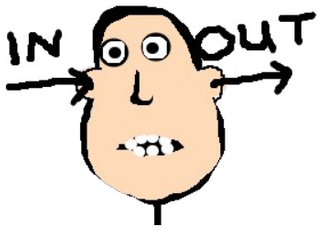

2) कोई भी आसुरी स्वभाव है तो उसे छोड़ना है। बाप जो ज्ञान घास खिलाते हैं, उसे उगारते रहना है।









वरदानः- सर्व खजानों को विश्व कल्याण प्रति यूज़ करने वाले सिद्धि स्वरूप भव





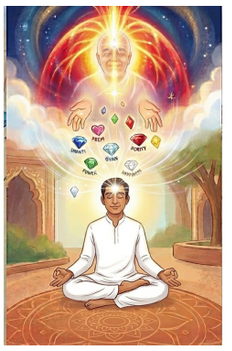

मीठे बापदादा ने क्या देखा...?

Attention..!

जैसे अपने हद की प्रवृत्ति में, अपने हद के स्वभाव-संस्कारों की प्रवृत्ति में बहुत समय लगा देते हो, लेकिन अपनी-अपनी प्रवृत्ति से परे अर्थात् उपराम रहो और हर संकल्प, बोल, कर्म और सम्बन्ध सम्पर्क में बैलेन्स रखो तो सर्व खजानों की इकॉनामी द्वारा कम खर्च बाला नशीन बन जायेंगे।

Direction of The Almighty



Time
Energy
Money

अभी समय रूपी खजाना, एनर्जी का खजाना और स्थूल खजाने में कम खर्च बाला नशीन बनो,

इन्हें स्वयं के बजाए विश्व कल्याण प्रति यूज़ करो तो सिद्धि स्वरूप बन जायेंगे।

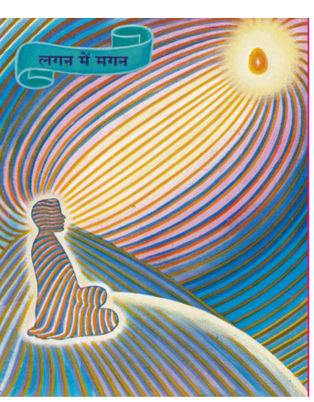

स्लोगनः एक की लगन में सदा मगन रहो तो निर्विघ्न बन जायेंगे।







ान, Red = योग, सेवा

ये अव्यक्त इशारे -

ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण स्थिति का अनुभव करो





Call of time/समय की पुकार

Point to ponder deeply...

बाबा हमसे क्या कहना चाहते हैं?

अब सेवा के, कर्म के भी बन्धन में नहीं आओ।

समझा?

हमारा स्थान, हमारी सेवा, हमारे स्टूडेन्ट, हमारी सहयोगी आत्मायें, यह भी सेवा के कर्म का बन्धन है, इस कर्मबन्धन से न्यारे अर्थात् कर्मातीत।

ऐसे थे मेरे मीठे *Brahma baba*

जैसे ब्रह्मा बाप ने सदा न्यारे और प्यारेपन का बैलेन्स रखा। सबको अपनेपन की अनुभति कराते भी हर एक का सम्बन्ध उस एक से (निराकार बाप से) जुटाया,



ऐसे आप बच्चे भी सबको अपनेपन की महसूसता दिलाए आत्माओं को समीप ठिकाने पर पहुंचाने वाले बनो, तब कहेंगे बाप समान।

If you wish to stay connected, Here is the link







BKdrluhar

Mind Mapping is Available Here

All वरदान slogans Oct 26 → Click

All अव्यक्त इशारे Oct 26 → Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place → Click

अगर आप को Mind Maps के रिलेटेड कोई Feedback या Suggestion भेजना है तो Click